© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 03 | July - September 2023

# बस्तर के आदिवासी–क्षेत्र की संस्कृति और जीवनपद्धति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

**सोहद्रा दीवान** शोध छात्रा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर
sohadradeewan87@gmail.com
**डॉ. संजना सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

## सारांश

बस्तर के आदिवासी–क्षेत्र की संस्कृति और जीवनपद्धति पर यह शोध बस्तर के समृद्ध और विविध सांस्कृतिक परिदृश्य को उजागर करता है। बस्तर, छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख आदिवासी क्षेत्र है, जिसमें गोंड, मुरिया, धुरवा, हल्बा, और भतरा जैसी प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। इन जनजातियों की अपनी विशिष्ट परंपराएं, रीति–रिवाज, और सामाजिक संरचनाएं हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाती हैं।

**मुख्य शब्द :** बस्तर, आदिवासी संस्कृति, जनजाति, सामाजिक संरचना, परंपराएं इत्यादि।

## परिचय

बस्तर क्षेत्र भारत के छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है और अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। बस्तर का क्षेत्रफल लगभग 39,114 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें घने जंगल, पहाड़, और नदियाँ शामिल हैं। यह क्षेत्र मुख्य रूप से आदिवासी जनसंख्या का घर है, जो अपनी विशिष्ट जीवनशैली, परंपराओं और संस्कृति के लिए जानी जाती है। बस्तर की संस्कृति और जीवनपद्धति को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल भारतीय आदिवासी समाज की विविधता को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि कैसे ये समुदाय प्राकृतिक संसाधनों के साथ सामंजस्य में रहते हैं। इस क्षेत्र की संस्कृति में समृद्धि और विविधता का पता लगाने से न केवल आदिवासी समाज के विकास को समझने में मदद मिलेगी, बल्कि इसे संरक्षित करने के प्रयासों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। बस्तर छत्तीसगढ़ के दक्षिणी भाग में स्थित है और इसमें कई जिले शामिल हैं, जैसे बस्तर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, कांकेर, और नारायणपुर। यह क्षेत्र अपने घने जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। इंद्रावती, गोदावरी और शबरी जैसी प्रमुख नदियाँ बस्तर से होकर बहती हैं, जो यहां की कृषि और जीवनशैली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बस्तर की प्रमुख जनजातियों में गोंड, मुरिया, धुरवा, हल्बा, और भतरा शामिल हैं। ये जनजातियाँ अपनी विशिष्ट भाषाएं, परंपराएं, और धार्मिक मान्यताएं रखती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धरोहर है, जो उन्हें विशिष्ट पहचान देती है।

## साहित्य समीक्षा

बस्तर के आदिवासी–क्षेत्र की संस्कृति और जीवनपद्धति पर काफी व्यापक और विविध साहित्य उपलब्ध है। इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य इस क्षेत्र से संबंधित प्रमुख अध्ययनों, पुस्तकों, लेखों और अन्य स्रोतों का संक्षिप्त अवलोकन करना है, जिससे बस्तर की सांस्कृतिक धरोहर और आदिवासी जीवन की गहरी समझ प्राप्त हो सके।

- वेरियर एल्विन ने भारत के आदिवासी समाजों पर व्यापक अध्ययन किया है। उनकी पुस्तकें, विशेषकर *वेरियर एल्विन की जनजातीय दुनिया* बस्तर की जनजातियों की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धरोहर पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।
- नरेश साहू की पुस्तक *बस्तर भूमि और संसाधनों के लिए आदिवासियों का संघर्ष* में बस्तर के आदिवासियों की भूमि और संसाधनों के लिए संघर्ष और उनकी आर्थिक स्थिति का विस्तृत विवरण है।
- भारत सरकार द्वारा समय–समय पर किए गए आदिवासी आर्थिक सर्वेक्षण भी बस्तर के आदिवासियों की आर्थिक गतिविधियों और जीवनशैली पर महत्वपूर्ण आंकड़े और विश्लेषण प्रदान करते हैं।
- *दक्षिण भारत के कूर्गों में धर्म और समाज* में श्रीनिवास ने दक्षिण भारत की आदिवासी धार्मिक और सामाजिक संरचना का अध्ययन किया है, जो बस्तर की जनजातियों के समानांतर अध्ययन में सहायक हो सकता है।
- रमेश ठाकर की पुस्तक बस्तर के आदिवासी बस्तर की धार्मिक मान्यताओं, परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है।
- अजय प्रधान की पुस्तक बस्तर कांस्य में बस्तर के प्रसिद्ध धोरा कला और अन्य शिल्प कलाओं का विस्तृत विश्लेषण और उनके सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व का वर्णन किया गया है।
- बस्तर पर प्रकाशित विभिन्न जर्नल आर्टिकल्स और रिपोर्ट्स में वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण मिलता है। उदाहरण के लिए, *जनजातीय अनुसंधान एवं विकास जर्नल* में बस्तर के आदिवासी जीवन पर कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं।

**संस्कृति और परंपराएँ:**

- **धार्मिक मान्यताएँ :** बस्तर के आदिवासी समुदाय मुख्यतः प्रकृति पूजक होते हैं और वृक्ष, पहाड़, नदियों और ग्राम देवताओं की पूजा करते हैं। दशहरा यहां का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।
- **कला और शिल्प:** बस्तर का धातु शिल्प (धोरा कला) और माटी कला प्रसिद्ध है। आदिवासी कलाकार पारंपरिक तरीकों से तांबे और पीतल की मूर्तियाँ, बर्तन और अन्य वस्त्र बनाते हैं।
- **संगीत और नृत्य :** आदिवासी संगीत और नृत्य यहां की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। ढोल, मादल और तुरही जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है। गौर नृत्य और माड़िया नृत्य यहाँ के प्रमुख नृत्य रूप हैं।

**संस्कृति और जीवनपद्धति के प्रमुख आयाम**

बस्तर की संस्कृति और जीवनपद्धति विविध और समृद्ध है, जिसमें आदिवासी समुदायों की अनूठी परंपराएं, रीति–रिवाज, और सांस्कृतिक धरोहर शामिल हैं। इन आयामों का विश्लेषण करने से बस्तर के आदिवासी समाज की गहराई को समझने में मदद मिलती है।

**1. सामाजिक संरचना और संगठन**

**पारिवारिक संरचना:** बस्तर के आदिवासी समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने–अपने कार्यों का निर्वहन करता है, जिसमें कृषि, शिल्पकला, और घरेलू काम शामिल हैं।

**सामाजिक संगठन:** प्रत्येक गाँव की अपनी पंचायत होती है, जो सामाजिक और धार्मिक मामलों का निपटारा करती है। यह पंचायत व्यवस्था सामुदायिक निर्णय लेने और विवादों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**2. आर्थिक जीवन**

**कृषि:** बस्तर के आदिवासी समुदाय मुख्यतः कृषि पर निर्भर होते हैं। धान, मक्का, और दालें प्रमुख फसलें हैं। झूम खेती (शिफ्टिंग कल्टिवेशन) भी कुछ क्षेत्रों में प्रचलित है।

**वन आधारित अर्थव्यवस्था:** जंगलों से लकड़ी, फल, जड़ी–बूटियां, और शहद जैसे प्राकृतिक संसाधन प्राप्त होते हैं, जो आदिवासियों की आय और जीवनयापन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

**कुटीर उद्योग:** धोरा कला (धातु शिल्प) और माटी कला (मिट्टी के बर्तन) जैसे कुटीर उद्योग भी आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

**3. धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन**

**प्रकृति पूजा:** बस्तर के आदिवासी समुदाय प्रकृति पूजक होते हैं। वे वृक्ष, पहाड़, नदियों और ग्राम देवताओं की पूजा करते हैं। यह धार्मिक मान्यता उनके दैनिक जीवन और परंपराओं में गहराई से निहित है।

**ग्राम देवता:** हर गाँव का अपना एक देवता होता है, जिसे ग्राम देवता कहते हैं। ग्राम देवता की पूजा सामुदायिक एकता और सुरक्षा के लिए की जाती है।

**त्योहार और उत्सव:** दशहरा बस्तर का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे कई दिनों तक धूमधाम से मनाया जाता है। माड़िया नृत्य और गौर नृत्य जैसे सांस्कृतिक नृत्य भी त्योहारों का हिस्सा होते हैं।

**4. सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ**

**संगीत और नृत्य :** आदिवासी संगीत और नृत्य यहां की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। ढोल, मादल, तुरही जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है। गौर नृत्य और माड़िया नृत्य प्रमुख नृत्य रूप हैं, जिन्हें विशेष अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है।

**कला और शिल्पकला:** बस्तर का धातु शिल्प (धोरा कला) और माटी कला प्रसिद्ध है। आदिवासी कलाकार पारंपरिक तरीकों से तांबे और पीतल की मूर्तियाँ, बर्तन और अन्य वस्त्र बनाते हैं।

**5. भोजन और रहन–सहन**

**पारंपरिक भोजन:** बस्तर के आदिवासी समुदायों का भोजन सरल और पोषक होता है, जिसमें चावल, दाल, और जंगल से प्राप्त विभिन्न प्रकार के फल, सब्जियां और जड़ी–बूटियां शामिल हैं। मछली और मांस भी उनके भोजन का हिस्सा होते हैं, विशेषकर त्योहारों और विशेष अवसरों पर।

**आवास और वस्त्र:** आदिवासी समुदाय मुख्यतः झोपड़ियों में रहते हैं, जो बाँस, मिट्टी और पत्तियों से बनी होती हैं। उनके वस्त्र प्राकृतिक रेशों से बने होते हैं, और महिलाएं पारंपरिक साड़ियों और पुरुष धोती पहनते हैं।

**6. शिक्षा और स्वास्थ्य**

**शिक्षा:** शिक्षा की स्थिति में सुधार के प्रयास जारी हैं, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ हैं। स्कूलों की कमी और आर्थिक कारणों से कई बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

**स्वास्थ्य :** पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ और जड़ी–बूटियों का प्रयोग आम है। आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच भी धीरे–धीरे बढ़ रही है, लेकिन अभी भी ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है।

**वेशभूषा**

पुरुष आम तौर पर लंगोट या छोटा सा गमछा कमर मे बांधते हैंय जिसे वे लुंगी या धोती कहते हैं। सिर पर पगड़ी का भी चलन है और तीर–कमान या फरसा(चौड़े फाल वाली कुल्हाड़ी) धारण करते हैं। स्त्रियां गाथि मारकर साड़ी लपेटती हैं। बालों को जूड़ा बांधकर मोतियों और फूलों से सजाती हैं ।

**संस्कार /परंपराए**

- **मृत्यु संस्कार**

किसी की मृत्यु होजाने पर एक विशेष लय मे ढोल नगाड़े बजाकर संदेश भेजा जाता है जिसे सुनकर आस पास के लोग मृतक के घर जमा हो जाते हैं। यहाँ किसी वृद्ध की मृत्यु को शादी विवाह समझा जाता है और उसी तरह बाजे गाजे के साथ झूमते गाते शव यात्रा निकाली जाती है। मठ मे दारू मुर्गा, नाच–गाना, हास्य–व्यंग आदि के साथ आनंदोत्सव आयोजित होता है। पांच छरू दिन पश्चात् बड़े काम यानि विशेश क्रिया कर्म का आयोजन होता है जिसमे मृतक के लिये शराब तथा भोजन, फल, कांदा, चावल, बर्तन कपड़ा आदि रखाजाता है । तालाब मे कलश रखकर तेल हल्दी चढ़ाते हैं। तत्पश्चात् परिवार के सभी लोग मिलकर मृतक की आत्मा को ढूंढते हैं। तालाब का जो जीव सबसे पहले मिलता है उसे ही मृतक की आत्मा माना जाता है और जिसे सबसे पहले मिलता है उसे ही मृतक से सबसे अधिक प्रेम करने वाला माना जाता है। इस जीव को डूमा देव कहा जाता है। अब डूमा देव की शादी का मंडप गड़ाकर मदिरापान, नाच–गाना तथा मृतक की जीवन के बारे मे गायन होता है। मृतक की याद मे पेड़ लगाने की भी प्रथा है। यहाँ शव को जलाने या दफनाने दोनो प्रथाओं का चलन है।

- **जन्म सम्बन्धित संस्कार**

यहां गर्भवती महिला को घर से बाहर डेरा बनाकर रखने की प्रथा हैय जहां वह अकेली ही रहती है और गर्म पानी से नहाती है । प्रसव पीढ़ा होने पर ये मानसिक और शारीरिक रूप से सुदृड़ महिलायें बिना किसी की सहायता के, अकेले अपने ही दम पर सन्तान को जन्म देती हैं। बच्चा पैदा होने के बाद वह स्वयम् नहा धोकर कपड़े पहनकर आ जाती। शिशु जनम के दौरान पुरुष वर्ग चावल लेकर देवों का आव्हान करते रहते है। जनम देने के पश्चात् महिला को आग के पास सुलाया जाता है। प्रसूता महिला की सास तथा जेठानी मिलकर बच्चे के नाल को एक दोना पत्तल मे लपेटकर आग के पास रख देते हैं जहाँ वह धीरे–धीरे जलकर खत्म हो जाता है। प्रसूता को अरहर की दाल का पानी या आटे का हरीला पीने को दिया जाता है। इसके पश्चात् पन्द्रह दिनो तक हांडी छुपाने आदि के नेग दस्तूर होते हैं जिसमे एक महिला पुजारन जिसे गायतिन कहते हैं, मां बच्चे को नहला धुलाकर तेल लगाकर और कलश जलाकर आशिर्वाद की रस्म अदा कराती है। घर मे महुये की शराब उतारी जाती है। देवों को इस शराब का भोग लगाकर पीने पिलाने, नाचने गाने तथा भोजन का दौर चलता है।

- **महिलाओं से सम्बन्धित अन्य संस्कार**

यहां घरों मे विशेष रूप से देव कमरा होता है जहां जाना महिलाओं के लिये वर्जित होता है। लड़की के प्रथम मासिक धर्म पर लड़की स्वयं जंगल मे जाकर गड्ढा खोदकर प्रथम बार का फूल धरती माता को अर्पित कर आती है। तीन दिनो के बाद लड़की को पीढ़े पर बैठाकर हल्दी के पानी से नहलाकर हल्दी चावल का टीका लगाते तथा भेंट उपहार देते हैं।

- **घोटुल**

बस्तर की गोंड मुरिया जनजाति विगत कई वर्षों से शोध का अनुसंधान केंद्र बनी हुई है.वेरियर एल्विन ने 1941 से 1947 तक इस जनजाति का सूक्ष्म विवेचन किया था.मुरिया जनजाति का सांस्कृतिक संस्थान घोटुल अपनी प्रजाति के सामाजिक और धार्मिक जीवन का प्रमुख केंद्र है.घोटुल मुरिया जनजाति का युवागृह है जिसमें अविवाहित युवक–युवतियों को ही प्रवेश दिया जाता है.इसमें पुरुष सदस्यों को चेलिक एवं महिला सदस्य को मोटियारी कहा जाता है.चेलिकों का मुखिया सिरदार व मोटियारिनों की सरदार बेलोसा कहलाती है.उनके देवता का नाम शलिंगोश है. बस्तर में घोटुल एक समन्वयकारी संस्था है,जो वनवासियों के सांस्कृतिक अतीत को सबल बनाती है.यहां मुरिया युवक–युवतियां भावी जीवन की तैयारी करते हैं.यहां वे एक दूसरे की भावनाओं और विचारधाराओं को समझने का प्रयास करते हैं. गोकुल में जब इन्हीं युवक युवतियों की जोड़ी बन जाते हैं और आगे चलकर जब विवाह करना चाहे तो इसकी सूचना शसिरदारश को दी जाती है. विवाहित जोड़ों को गोकुल में जाना प्रतिबंधित रहता है. इस प्रकार घोटुल एक अनुशासन पूर्व संस्था है इसमें शर्म अनुशासन व मनोरंजन का अद्भुत समन्वय होता है।

- **गोदना**

वनवासियों का प्रमुख श्रृंगार गोदना है.यह वह अलंकरण है जिसके बिना आदिवासी महिला का जीवन अपूर्ण माना जाता है.बस्तर अंचल में वनवासी स्त्रियां 5 वर्ष की आयु से लेकर 12 वर्ष की आयु तक गोदना गुदवाती हैं वनवासियों में यह धारणा है कि यदि किसी महिला ने गोदना श्रृंगार नहीं किया तो मृत्यु उपरांत उसे डुमा(मृतक आत्माएँ)अपने साथ नहीं मिलातीं.जनजातियों में गोदना एक लोक संस्कार है।

- **नामकरण संस्कार**

नामकरण संस्कार या छठी बच्चे के जीवन का पहला संस्कार होता है.जिसे विभिन्न जनजातियां अलग–अलग जाति पर संपन्न करते हैं बच्चे का नाम नदी,पहाड़,दिन,महीना,ऋतु या विशिष्ट अवसरों के नाम या उसके रंग रूप के आधार पर रखा जाता है– चौतू, जेठू ,मंगली, समवारीन, ठोठा, मस्सू आदि नामकरण के दिन घर को साफ किया जाता है माता स्नान करती है तथा मिट्टी के नए बर्तन लाए जाते हैं गोंड जनजाति के लोग अपने बच्चों को नामकरण में दिए गए नाम से संबोधित नहीं करते उसका एक नाम रख लेते हैं. नामकरण संस्कार गोंड जनजाति में गाँयतिन या पुजारिन की सहायता से किया जाता है।

**विवाह संस्कार**

जनजातियों में कई प्रकार के विवाह प्रचलित है.जैसे पैसा मुंडी आना,पानी उड़ेलना,लमसेना बिहाव आदि.गाँव का प्रमुख गायँता–पुजारी इसे संपन्न कराते हैं.सामान्य विवाह के पूर्व सगाई की रस्म संपन्न होती है जिसे श्माहलाश कहा जाता है.इसमें गुड़ व चिवड़ा लेकर लड़का पक्ष वाले लड़की के घर जाते हैं. लमसेना में वर सास–ससुर के घर रहकर उनकी सेवा करता है ।

- **पैठुल विवाह**

लड़की अपने पसंद के लड़के के घर मे पैठ जाती या घुस जाती है। अब यदि लड़का भी सहमत हो जाये तो, परिवार के एतराज के बावजूद इनके विवाह को समुदाय की अनुमति प्राप्त हो जाती है। यह बैगा और कई अन्य जनजातियों मे प्रचलित हैय और पैठुल बिहाव या पैठुल विवाह के नाम से जाना जाता है।

- **भगेली विवाह**

भगेली बिहाव या भगेली विवाह मे लड़का लड़की दोनो की आपसी सहमति होती है। जब लड़की के माता पिता रिश्ते के विरोध मे हों तो लड़की रात मे अपने घर से भागकर अपने प्रेमी के घर के छप्पर के नीचे शरण लेती है। लड़का एक लोटा पानी अपने छप्पर पर बहाता है जिसे लड़की अपने सिर पर लेती हैय तब लड़के की माँ लड़की को अपने घर के भीतर ले जाती है। गांव का मुखिया या प्रधान तब लड़की को अपनी शरण मे लेता है और लड़की के भगेली होने की सूचना उसके परिवार को देता है। रात मे मड़वा गड़ाकर विवाह कर दिया जाता है और लड़की के परिवार को भी किसी न किसी तरह भेंट आदि देकर मना लिया जाता है।

- **उढ़रिया विवाह**

यह साधारण प्रकार का प्रेम विवाह ही है। जब परिवार या समुदाय सहमत न हों तब लड़का लड़की किसी मेले–मढ़ई(साप्ताहिक या वार्षिक हाट–बाजार) मे मित्रों की सहायता से मिलकर भाग जाते हैं। फिर किसी दूसरे गांव मे कोई परीचित अथवा रिश्तेदार के घर जाकर विवाह रचा लेते हैं। परिवार वाले उन्हें ढूंढकर वापस लाते है। अगर विवाह समुदाय से बाहर हुआ हो तो बहिष्कार का सामना करना पड़ता है लेकिन अंततरू कुछ दण्ड आदि के बाद मान्यता प्राप्त हो ही जाती है।

- **चढ़ विवाह**

इसमे लड़का बारात लेकर लड़की के घर जाता है और विधि विधान पूर्वक विवाह रचाकर वधु को अपने घर ले आता है।

- **पठोनी विवाह**

इस विवाह मे लड़की बारात लेकर, लड़के के घर जाती है और विधि–विधान पूर्वक विवाह रचाकर वर को विदा कराकर अपने घर ले आती है।

- **लमसेना विवाह**

इस पद्धति मे शादी के इच्छुक युवक को कन्या के घर जाकर एक–दो वर्ष या इससे अधिक अवधि तक रहना और स्वयम् को खेती बाड़ी तथा परिवार के हर कार्य के योग्य सिद्ध करना होता है। युवक को लड़की के साथ पति की तरह ही रहने की अनुमति तो होती है किंतु लड़की के परिवार की सन्तुष्टि के पश्चात ही विवाह की अनुमति मिलती है।

## निष्कर्ष

बस्तर की आदिवासी संस्कृति और जीवनपद्धति पर उपलब्ध साहित्य विस्तृत और गहराई से भरा हुआ है। यह साहित्य बस्तर की सामाजिक संरचना, आर्थिक जीवन, धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और समकालीन

परिवर्तनों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि बस्तर की संस्कृति और जीवनपद्धति का अध्ययन न केवल भारतीय आदिवासी समाज की विविधता को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी बताता है कि कैसे ये समुदाय अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखते हुए विकास के साथ तालमेल बिठा रहे हैं। बस्तर की आदिवासी संस्कृति और जीवनपद्धति में सामुदायिकता, प्रकृति–पूजा, और पारंपरिक ज्ञान की गहरी जड़ें हैं। यहां की सामाजिक संरचना संयुक्त परिवार प्रणाली और पंचायत व्यवस्था पर आधारित है, जबकि आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि, वन संसाधनों और शिल्पकला पर निर्भर करता है। धार्मिक मान्यताओं में प्रकृति पूजा और ग्राम देवता की पूजा प्रमुख हैं। सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में संगीत, नृत्य, और शिल्पकला का महत्वपूर्ण स्थान है। पारंपरिक भोजन और आवास, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और सरल जीवनशैली बस्तर के आदिवासी समुदायों की विशेषताएं हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के प्रयासों के बावजूद, अभी भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बस्तर के आदिवासी समाज ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते हुए विकास के साथ तालमेल बनाए रखा है, जो उनके सतत विकास और सांस्कृतिक संधारण के लिए महत्वपूर्ण है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एल्विन, वेरियर. वेरियर एल्विन की जनजातीय दुनिया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1964।
2. एल्विन, वेरियर. नेफा के लिए एक दर्शन– उत्तर एवं पूर्व सीमांत एजेंसी, 1957
3. कुमार, हिमांशु. बस्तर डिस्पैचेज: बस्तर के गृहयुद्ध के दौरान एक यात्रा। पेंगुइन इंडिया, 2012।
4. साहू, नरेश. भूमि और संसाधनों के लिए आदिवासियों का संघर्ष। ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2009।
5. श्रीनिवास, एम.एन. दक्षिण भारत के कूर्गों में धर्म और समाज। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952।
6. ठाकर, रमेश. बस्तर के आदिवासी. नेशनल बुक ट्रस्ट, 1984.
7. प्रधान, अजय. बस्तर कांस्य. शिल्प संग्रहालय, 2003.
8. भारतीय आदिवासी आर्थिक सर्वेक्षण. भारत सरकार, 2011.
9. जर्नल आर्टिकल्स और रिपोर्ट्स. जर्नल ऑफ ट्राइबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली।
10. त्रिपाठी, अनिल. ठेंजंतरू ठेंजंतरू ।ैजनकल पद ज्तपइंस म्बवदवउल. ज्तपइंस त्मेमंतबी प्देजपजनजम, 1995.